'पृथ्वीराज रासो' में वर्णित होलिका तथा दीपमालिका की कथा

डॉ.उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर,

जिला.वलसाड–396050 गुजरात

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत, गुजरात, भारत

Abstract

'पृथ्वीराज रासो' आदिकाल के कवि चंदबरदाई द्वारा रचित हिंदी का प्रथम महाकाव्य है। जिसमें कवि ने दिल्ली नरेश राजा पृथ्वीराज के जीवन–चरित को अभिव्यक्त किया है। पृथ्वीराज रासो के इक्कीस और बाइसवें समय में होलिका तथा दीपमालिका पर्व की कथा है। पृथ्वीराज चौहाण द्वारा कवि चंद बरदाई से इसके बारे में पूछने पर कवि इसका वृत्तांत सुनाते हैं। वैसे होलिका और दीपमालिका की कथा भविष्य पुराण में प्राप्त होती है। इससे यह भी स्पष्ट है कि कवि चंद पुराणों से परिचित थे और उन्होंने ऐसे पर्वों का वर्णन करके आदिकालीन साहित्य की कथानक–योजना व रूढियों का परिचय दिया है।

Key Words : पृथ्वीराज चौहाण, ढूँढिका, फागुन, सत्याश्रम

प्रस्तावना– 'पृथ्वीराज रासो' आदिकाल के कवि चंदबरदाई द्वारा रचित हिंदी का प्रथम महाकाव्य है। यह ढाई हजार पृष्ठों का है। रासो का बृहत्तम संस्करण जो नागरी प्राचारिणी सभा से प्रकाशित हुआ है, उसमें 69 समय (सर्ग) हैं। यह ग्रंथ ऐतिहासिक कम, काल्पनिक अधिक है। जिसमें कवि ने दिल्ली नरेश राजा पृथ्वीराज के जीवन–चरित को अभिव्यक्त किया है। इस पुस्तक के अलग–अलग संस्करण मिलने के कारण यह विवादास्पद बन गया है। इसकी प्रामाणिकता के बारे में विद्वान एकमत नहीं हैं। 'पृथ्वीराज रासो' में तत्कालीन समग्र युग अपनी सभी विवेशताओं एवम् मर्यादाओं के साथ यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है।

1. होलिका की कथा– राजा पृथ्वीराज चौहाण एक बार कवि चंद से पूछते हैं कि फागुन में लोग लाज–शरम छोड़कर अबोल (गाली) बकते हैं, माता, पिता और गुरु का आदर नहीं करते, टोलियों में निकलते हैं, चारों वर्ण के लोग साथ में मिलते हैं, जिससे कलह होती है, इसका वृत्तांत सुनाओ। तब कवि चंद कहते हैं कि चौहाण वंश में ढूँढा नामक एक राक्षस था। उसकी छोटी बहन का नाम था ढूँढिका। ढूँढा ने काशी जाकर सौ वर्ष तप किया था यह सुनने पर ढूँढिका भी अपने भाई के पास जाती है। तब उसका भाई भस्म हो जाता है किन्तु ढूँढिका यों ही बैठी रहती है। पवन खाकर सेवा करते उसे सौ वर्ष बीत जाते हैं। तब देवी पार्वती प्रसन्न होकर उससे कहती है कि मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ। वरदान माँग ले। तब ढूँढिका वरदान माँगती है– "बाल वृद्ध भष्षन करौं, हम को दै महमाय।"[१] मैं आबाल–वद्ध सभी का भक्षण कर सकूँ। देवी पार्वती ने यह वरदान दे दिया। किन्तु बाद में गिरिजा ने शिवजी के पास जाकर कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि जिससे ढूँढिका की बात भी रह जाये और वह नर–भक्षण न कर सकें। तब शिवजी ने आज्ञा दी–

"फागुन मासह तीन दिन। करौ अनेरो रंग।।

रासभ परि चढि चढि हसहिं। सूप सीस धर लेहु।।

गोसा बंधै गलि फिरै। हो हो सबह करेहु।।"[२]

कि जो लोग फागुन में गाली बकते हुए, गधे पर चढें, तरह–तरह के स्वाँग बनावें, सूप शिर पर ले लेगें, हो हो की आवाज करेंगे, उनको छोड़ बाकी सभी का ढूँढिका भक्षण कर सकती है। ढूँढिका ने जब आकर देखा तो सभी को अज्ञान, गाली बकते, मदमस्त, पागल से बन गए थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो नर–नारी की मति भ्रष्ट हो गई हो,वे सिंधू राग बजाते हुए नवीन गीत गाते थे, हो हो, हो, हो करते थे। लोगों को गाते, बजाते, आग जलाते, धूल और राख उड़ाते पाया। इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला–

"इहि विधि बाउ जवाविउ। फगुन मास सों भाव।।

लज्ज भज्ज विघ्घन गई, भावै षाव सुषाव।।"[३]

तब से वसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढूँढिका की स्तुति करते हैं। 'पृथ्वीराज रासो' के बाइसवें समय में यह कथा वर्णित हुई है।

यह कथा 'भविष्य पुराण' में वर्णित है। युधिष्ठिर द्वारा श्रीकृष्ण से होली के बारे में पूछने पर वे कहते हैं–सत्ययुग के राजा रघु के राज्य में एक दिन प्रजा त्राहि त्राहि पुकारने लगी। प्रजा ने राजा से ढोंढा नामक की एक राक्षसी के उत्पात की बात कही। तब राजा रघु ने वसिष्ठ मुनि से पूछा तब उन्होंने राजा रघु से कहा था– माली नामक एक राक्षस था। उसकी एक ढोंढा नामक पुत्री थी। उसने कठोर तपस्या कर शिवजी को प्रसन्न किया था। शिव ने उसे वरदान माँगने कहा तब उसने वरदान माँगा कि "प्रभो, देवता, दैत्य, मनुष्य आदि मुझे न मार सकें तथा अस्त्र–शत्र आदि से भी मेरा वध न हो, साथ ही दिन में, रात्रि में, शीतकाल, उष्णकाल तथा वर्षाकाल में भीतर अथवा बाहर कहीं भी मुझे किसी से भय न हो।" शिवजी ने वरदान देते हुए यह भी कहा कि तुम्हें उन्मत्त बालकों से भय होगा। ढोंढा नित्य बालकों और प्रजा को पीड़ा देती थी। 'अडाडा' मंत्र का उच्चारण करने पर वह शांत हो जाती थी। इसलिए उसे 'अडाडा' भी कहते हैं।

ढोंढा का पीछा छुडाने का उपाय भी श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को बताया था जो इस प्रकार है– फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को सभी लोगों को निडर होकर क्रीडा करनी चाहिए। बालक लकड़ियों के बनी हुई तलवार लेकर वीर सैनिकों की भाँति हर्ष से युद्ध के लिए उत्सुक हो दौड़ते हुए निकल पड़े और आनंद मनायें। सूखी लकड़ी, उपले, सूखी पत्तियाँ आदि अधिक–से अधिक एक स्थान पर इकट्ठाकर उस ढेर में रक्षोघ्र मंत्र से अग्नि लगाकर उसमें हवनकर, हँसकर ताली बजानी चाहिए। उस जलते हुए ढेर की तीन बार परिक्रमा कर बच्चे, बूढ़े सभी आनंददायक विनोदपूर्ण वार्तालाप करें और प्रसन्न रहें। इस प्रकार रक्षामंत्रों से, हवन करने से, कोलाहल करने से तथा बालकों द्वारा तलवार से प्रहार के भय से उस दुष्ट राक्षसी का निवारण हो जाता है।

राजा रघु ने वसिष्ठ की बात सुनकर इस प्रकार से उत्सव करने को कहा। जिससे राक्षसी का विनाश हो गया। उसी दिन से इस लोक में ढोंढा का उत्सव प्रसिद्ध हुआ और अडाडा की परंपरा चल पड़ी। ब्राह्मणों द्वारा सभी दुष्टों और रोगों को शांत करनेवाला वर्सोधारा–होम इस दिन किया जाता है, इसलिए इसको 'होलिका' भी कहा जाता है।[४]

2. दीपमालिका की कथा– यह कथा रासो के तेइसवें समय में वर्णित है। होलिका की कथा सुनने के बाद पृथ्वीराज कार्तिक में दीपमालिका का जो पर्व होता है, उसका वृतातं पूछते हैं। तब कवि चंद उन्हें दीपमालिका की उत्त्पत्ति की ये कथा सुनाते हैं– सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का

बेटा सोमेश्वर बहुत ही प्रतापी था। स्वर्ग के देवता व पृथ्वी के लोग सब उसकी सेवा करते थे। वह प्रजापालन में दक्ष था, जिससे चारों वर्ण और आश्रम के सब लोग उससे आनंदित रहते थे।

सत्यावती नगरी, जो समुद्र किनारे पर स्थित थी, उसमें अच्छे बाग लगे थे। वहाँ एक वैदिक बाह्मण रहता था। उस ब्राह्मण की नागरी स्त्री ने एक दिन उससे कहा-

"विथ्था जीवन मनुष कौ, जो धन नाहीं पास।।

तातें को उपचार कर। करै रहै बन वास।।"[५]

जिसके पास धन नहीं होता, उसका जीवन मिथ्या है,उसके लिए कोई उपाय करो। तब सत्याश्रम ब्राह्मण ने जीवन, जन्म वृथा गया, शरीर में पाप का उदय हुआ है, मानकर ज्ञान–ध्यान में चित्त लगाया। उसने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया। विष्णु भगवान ने यह बात ब्रह्मा को बतायी, ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर रुद्र से कहा, तब रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो क्योंकि हमारे सारे काम वही करती है। तीन वर्ष, तीन महीना और तीन घड़ी में माया प्रसन्न हुई और उसने ब्राह्मण को चौदह रत्न दिए। तब उसने सोचा कि राजा की सेवा करनी चाहिए। ऋद्धि और सिद्धि से क्या होता है? ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि दीप बुझाने पर लक्ष्मी चली जाती है। कार्तिक अमावस सोमवार के दिन लक्ष्मी उसके पास आती है।

राजा की सेवा करते हुए ब्राह्मण के चार साल बीते तब राजा ने कहा कि वरदान माँग। तब ब्राह्मण ने दीपदान का वरदान माँगते हुए कहा कि कार्तिक अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक कहीं भी न जले। तब राजा ने कहा कि ये तुमने क्या माँगा। तुम्हें तो अन्न, धन, गाँव माँगना चाहिए था। अब घर जाओ। घर जाकर ब्राह्मण ने एक मन तेल और सवा सेर रुई मँगवाई। कार्तिक आने पर उसने राजा से कहा कि मैंने जो माँगा था, वह दीजिए। राजा ने सारे राज्य में यह आज्ञा प्रसारित कर दी कि कार्तिक अमावस की रात कोई भी दीपक न जलायें। उस रात देवी लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने देखा कि सारे राज्य में अँधेरा है, केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर उसी के यहाँ आई और सोचा कि यहाँ सदा रहना चाहिए–

"लच्छि समंदं निस्सरी। आई नगरहु तथ्य।।

अंधारौ अहि पूरजे। सु दीपक दिट्ठौ जथ्थ।।

बंभन कै घरि दिष्षि करि। आइ सही दरबार।।

अह निसि बासै हम बसै। लच्छी कहै विचार।।"[६]

देवी लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसकी गरीबी दूर कर वरदान दिया कि तेरे घर मैं सात जन्म तक बसूँगी। लक्ष्मी के आनो से जब दरिद्र भागने लगा तो ब्राह्मण ने उसे पकडकर कहा कि मैं तुझे जाने नहीं दूँगा। तब दरिद्र ने कहा कि तू मुझे जाने दे। इस नगर में मैं कभी न आऊँगा। उसी घड़ी से उसके यहाँ आनंद हो गया। उसके घर पर हाथी घोडे झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका पर्व मनाया जाने लगा–

"पुब्ब पछिम उत्तर दछिन। दीपमालिका मान।।

षान पान परिमान मन। काम मनोरथ थान।।

कही चंद आनंद सौं। पुच्छी नृप प्रिथीराज।।

दीपमालिका प्रगट हुइ घरि घरि मंगल साज।।"[७]

निष्कर्ष– 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है। जिसमें कवि चंद बरदाई ने दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहाण की वीरता, शृंगार के

साथ–साथ लोक–जीवन को भी अभिव्यक्त किया है। रासो में वर्णित होलिका एवम् दीपमालिका की कथाएँ इसका प्रमाण है। कवि चंद ने रासों में इसका वर्णन करके इन दोनों पर्वों की उत्पत्ति का रहस्य प्रकट किया है। जिसके द्वारा कवि ने आदिकालीन समाज–जीवन के लोकरंजक पक्ष को उजागर किया है।

संदर्भ–संकेत–

[१] पंड्या, मोहनलाल विष्णुलाल–दास, श्यामसुंदर (संपा.) (सं. 2051), पृथ्वीराज रासो भाग–1, पृ.608, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा

[२] वही.

[३] वही.पृ.609

[४] उत्तरपर्व–भविष्यपुराण (सौर–माघ, श्रीकृष्ण संवत्–5217, जनवरी,1992), कल्याण, गोरखपुर, वर्ष–66, संख्या–1, पृ.403

[५] पंड्या, मोहनलाल विष्णुलाल–दास, श्यामसुंदर (संपा.) (सं. 2051), पृथ्वीराज रासो भाग–1, पृ.610, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा

[६] वही.पृ.612

[७] वही.पृ.613

RESEARCH CHRONICLER